IB DIPLOMA PROGRAMME
PROGRAMME DU DIPLÔME DU BI
PROGRAMA DEL DIPLOMA DEL BI

M07/2/ABHIN/HP1/HIN/TZ0/XX/T

22072304

HINDI B – HIGHER LEVEL – PAPER 1
HINDI B – NIVEAU SUPÉRIEUR – ÉPREUVE 1
HINDI B – NIVEL SUPERIOR – PRUEBA 1

Monday 7 May 2007 (morning)
Lundi 7 mai 2007 (matin)
Lunes 7 de mayo de 2007 (mañana)

1 h 30 m

TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for Paper 1.
- Answer the questions in the Question and Answer Booklet provided.

LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N’ouvrez pas ce livret avant d’y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l’épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la Prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

© IBO 2007

पाठांश (क)

एक महल हवाखोरी के लिए

गुलाबी नगरी जयपुर की आलीशान इमारत हवामहल राजस्थान के प्रतीक के रूप में दुनियाभर में प्रसिद्ध है। बुर्जनुमा संरचनाओं पर आधारित इस अर्धअष्टकोणीय इमारत में 365 खिड़कियां और झरोखे बने हैं। जाहिर है इसी विशेषता के लिए इस इमारत को हवामहल नाम दिया गया। इसका निर्माण 1799 में जयपुर के महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने करवाया था। राजस्थानी और फारसी स्थापत्य शैलियों के मिले-जुले रूप में बनी यह इमारत जयपुर के बड़ी चौपड़ चौराहे से चांदी की टकसाल जाने वाले रास्ते पर स्थित है। मुख्यमार्ग से नजर आने वाला हवामहल का हिस्सा ही वास्तव में इसका भव्यतम भाग है। यही दुनियाभर में इसकी पहचान है। ज्यादातर पर्यटक हवामहल को यहीं से देखकर चले जाते हैं। लेकिन अंदर से भी यह इमारत उतनी ही देखने लायक है। हवामहल के कुछ हिस्से में राजकीय संग्रहालय बनाया गया है। इसमें प्राचीन सांस्कृतिक विरासत से जुडी अनेक अनमोल धरोहर सुरक्षित हैं।

हवामहल के आनंदपोल और चांदपोल नाम के दो द्वार हैं। आनंदपोल पर बनी गणेश प्रतिमा के कारण इसे गणेश पोल भी कहते हैं। चांदपोल में झरोखों की राजपूत शैली की सज्जा भी दर्शनीय है। अंदर दो बड़े चौक हैं। एक चौक के बीच में बड़ा सा कक्ष बना है। इस कक्ष में अनेक प्राचीन प्रतिमाएं और अन्य प्राचीन वस्तुएं संग्रहित हैं। पास ही एक कमरे में चित्रकला और हस्तशिल्पों का संग्रह है। यह कक्ष मूलतः यहां की भोजशाला थी। शरद मंदिर कक्ष में सवाई जयसिंह और जयपुर के कछवाहा राज्य के कुछ महत्वपूर्ण महाराजाओं व प्रतिष्ठित व्यक्तियों के फोटो प्रदर्शित हैं। विभिन्न कक्षों में बनी संग्रहालय दीर्घाओं में खुदाई में निकली मूर्तियां, पत्थर व तांबे के उपकरण, ताम्र पत्र व सिक्के भी देखने लायक हैं। इमारत का पूर्वी भाग मुख्य भवन कहा जाता है। इस पांच मंजिला भवन में शरदमंदिर, रतनमंदिर, विचित्र मंदिर, प्रकाशमंदिर और हवामंदिर की स्थापत्य रचना बेहद अनूठी है। बताते हैं इसी हिस्से में बैठ राजपरिवार की स्त्रियां हवामहल की खिड़कियों से उत्सवों की धूमधाम देखा करती थीं। झरोखे व जालियां और सुंदरता बढ़ाते कलश व कंगूरे हवामहल के स्वरूप को अनोखी विशिष्टता प्रदान करते हैं। ऊपर की मंजिलों का पिरामिड के रूप में सिमटा हुआ आकार भी मोहक प्रतीत होता है। गुलाबी नगरी का यह गुलाबी गौरव अपनी अदभुत बनावट के कारण ही आज विश्वविख्यात है।

पाठांश (ख)

भारतीय लोक नाटक में लंदन बम धमाकों की गूंज

लंदन बम धमाकों की जिज्ञासा की गूंज भारतीय लोक नाटक में सुनाई दी। बम धमाकों के एक महीने बाद जिसमें 50 से ज़्यादा लोग मारे गए थे, उसपर पूर्वी भारत के कोलकत्ता शहर में नाट्य प्रस्तुति को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया चल रही है। जात्रा नामक यह लोक नाट्य पंरपरा जिसे गांव और शहरों में घूम घूमकर दिखाया जाता है, एक बेहद लोकप्रिय पंरपरा है।

भारतीय महाकाव्य और पांरपरिक कथाएं जात्रा का आधार रही हैं। आमतौर पर जात्रा की प्रस्तुति 4 घंटे लंबी होती है। इसमें तेज़ रोशनी और संगीत की आवाज़ ऊंची होती है। विशाल मंच और व्यापाक रूप सज्जा और वेशभूषा का प्रयोग खुले आसमान के नीचे किया जाता है। लेकिन “दिग्विजय ऑपरा” मानता है कि ताज़ा ख़बरों से संबंधित विषयों पर आधारित नाटक गांव में दर्शकों को बड़ी संख्या में जात्रा की ओर खींचते हैं। इसलिए हरधान रॉय बड़ी मेहनत से 200 सदस्यों को लंदन आगजनी के दृश्य को दिखाने की तैयारी कर रहे हैं।

इस नाटक दल ने पूरे हिंदुस्तान से कारीगर बुलाएं हैं ताकि लंदन की अहम जगहों और रेलगड़ियों को मंच पर दिखाया जा सके। बम धमाकों की छानबीन में उन सभी बातों को दिखाया जाएगा जो अक्टूबर महीने तक हो चुकी हैं। नाटक का मुख्य अभिनेता स्कॉटलैण्ड यार्ड का अधिकारी होगा जो यह छानबीन कर रहा है। यह भूमिका गेहूँआ रंग वाले बंगाली अभिनेता द्वारा की जाएगी जो बीच बीच में अंग्रेज़ी के शब्द बोलेगा जिसे गांव की जनता समझ सके।

पोस्टर में जलते हुए लंदन की तस्वीर में कलाकारों की तस्वीरों के साथ रेलगाड़ी और इमारतों में आग के दृश्य - जो ज़्यादा न्यूयार्क की तरह लगते हैं - के कारण 75 रातों की टिकट अक्टूबर से पहले ही बिक चुकी हैं। प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर की भूमिका के लिए 48 वर्षीय अनुभवी कलाकार पार्था सारथी को चुना गया है, जिन्होंने पहले भी कई अंतराष्ट्रीय नेताओं की भूमिका निभाई है। नाटक का संदेश होगा कि आंतकवाद से कोई लाभ नहीं है। साथ ही जात्रा में लंदन की आबादी जिसके ज़रिए रंग, नस्ल और देशों की विभिन्नता को दिखाने का प्रयास होगा ताकि अलग अलग तरह के लोग कैसे एक साथ रहते हैं यह उभारा जा सके।

पाठांश (ग)

कुछ भूलें
रवीन्द्रनाथ त्यागी

वैसे में अपने निजी जीवन में काफ़ी सतर्कता से काम करता हूँ। फिर भी कभी-न-कभी कोई छोटी-मोटी भूल हो ही जाती है। एक बार एक दोस्त को चिट्ठी लिखी, तो बजाय "भाभीजी को नमस्ते और बच्चों को प्यार" लिखने के, मैं "भाभी जी को प्यार और बच्चों को नमस्ते" लिख गया। नतीजा यह हुआ कि वह दोस्त अभी भी मुझे शंका-भरी निगाहों से देखता है।

इसी तरह एक बार सहारनपुर पैसेंजर में बैठने के बजाय जौनपुर पैसेंजर में बैठ गया, जिससे बड़ी परेशानी हुई। यह गलती इस वजह से हुई कि दोनों गाडियाँ प्रयाग स्टेशन से लगभग एक ही समय छूटती थीं। पटने में था, तो एक बार गवर्नर की तरफ़ से चाय का निमंत्रण मिला। वहाँ शायद गणतंत्र दिवस के उपलक्ष में चाय पार्टी थी। वहां एक पुराना जिगरी दोस्त मिल गया। पता नहीं हम लोगों ने कितनी बातें कीं। काफ़ी देर बाद एक पुलिस अफ़सर ने बताया कि "जन गण मन" गाया जा चुका है। उस रात शर्म के मारे नींद नहीं आई।

एक बार सरकारी काम से बंबई गया। एयर इंडिया के दफ्तर में कुछ काम था। वहाँ उन दिनों कांग्रेस का अधिवेशन चल रहा था। दिल्ली वापस आने के लिए किसी ट्रेन में कोई सीट नहीं मिल रही थी। किसी तरह "फ्रंटियर मेल" में प्रथम श्रेणी के एक डिब्बे में सीट मिल गई। मैंने प्रथम श्रेणी का डिब्बा तलाशा और नीचे की बर्थ पर बिस्तर खोल दिया। मुझे बताया गया था कि मेरी सीट नीचे की है। इतने में किसी नेता के प्राइवेट सेक्रेटरी आए और मुझे बड़ी सख़्ती से आदेश देने लगे कि आप ऊपर की सीट पर जाइए। नीचे की सीट पर अमुक नेता जाएंगे। उन्होंने नर्मी से कहा होता तो मैं मान जाता। उनकी असभ्यता देखकर मैं अड़ गया। नेताजी रात को आए और ऊपर की सीट पर सो गए। उन्होंने कोई नाराज़गी नहीं दिखाई। दिल्ली आने पर मैंने बाहर चिपकी लिस्ट पर नज़र दौड़ाई। पता चला कि नीचे की सीट नेता जी को दी गई थी। मैं बहुत शर्मिंदा हुआ।

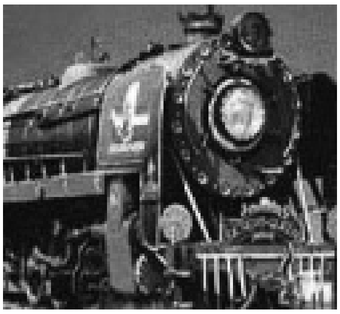

पाठांश (घ)

कितने निष्पक्ष हैं फिल्मी पुरस्कार

भारत में फ़िल्मों के लिए हर साल कई तरह के पुरस्कार दिए जाते हैं। सरकारी तौर पर राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार जैसे सम्मान दिए जाते हैं तो निजी पत्रिकाएँ या संगठन अपने-अपने पुरस्कार समारोह करवाते हैं जैसे फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार, स्क्रीन पुरस्कार, ज़ी अवार्डस, आइफ़ा अवार्डस आदि. मगर इन फ़िल्म पुरस्कारों का महत्व क्या होता है? क्या ये पुरस्कार वाक़ई फ़िल्मों की गुणवत्ता की कसौटी होते हैं?

पुरस्कार तो मिलने चाहिए लेकिन उन्हें निष्पक्ष होना चाहिए ताकि उनका हौसला बढ़ सके। अगर हम इन पुरस्कारों का इतिहास देखें तो ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जिनकी गुणवत्ता पर शक होता है। बिना निजी स्वार्थ के ये पुरस्कार नहीं दिए जाते। इनके पीछे बाजारी रणनीति होती है। पुरस्कार देने के पीछे मंशा होती है कि किसी कलाकार की सराहना की जाए तथा औरों को भी प्रोत्साहित किया जाए ताकि वे इसी स्तर के काम करें। कुछ हद तक यह पुरस्कार सिर्फ़ ख़बरों में बने रहने के लिए दिए जाते हैं। कुल मिलाकर इन पुरस्कारों को सराहा जाना चाहिए।

मुझे नहीं लगता कि पुरस्कारों से गुणवत्ता को परखा जा सकता है क्योंकि कई बार ख़राब फ़िल्मों को भी पुरस्कार मिल जाता है। राजनीति को दूर रखने के लिए कुछ किया जाना चाहिए। अब तो फ़िल्म पुरस्कारों के नाम से ही ऊब होने लगी है। अंग्रेज़ी फ़िल्मों की कॉपी करके भारतीय दर्शकों को अच्छा बेवकूफ़ बनाया गया है। मुझे नहीं लगता कि इसका फ़िल्मों की गुणवत्ता से कुछ लेना देना है। ढेर सारी अच्छी फ़िल्में होती हैं लेकिन पुरस्कार बार-बार कुछ ख़ास लोगों को मिलता रहता है। फ़िल्म केवल कला और विज्ञान नहीं बल्कि दुनिया को नज़दीक लाने का अच्छा माध्यम है। फ़िल्म जगत से जुड़े लोगों को अन्य लोगों की तरह पुरस्कार मिलना ही चाहिए। कई सम्मान विवादास्पद होते हैं और कई गुणवत्ता के आधार पर दिए जाते हैं. ये हमेशा से होता आया है।